VOL- XI | ISSUE- III | MARCH | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन

सुमित यादव
Address - H. No. 42, BL. No- 13,
Arya Samaj Road, PO- Kankinara,
PS- Bhatpara, 24 PGS (North), W. B. Pin - 743126
Email - wbsumityadav99@Gmail.com

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्य मानवीय मूल्य एवं संवेदनाओं को केंद्र में रखता है। मानवीय जीवन और परिवेश से कटकर या उसका विरोध करके किसी भी मूल्य और सिद्धांत को साहित्य पर आरोपित करने से साहित्य का ही नुकसान होगा। साहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय परिवारों का यथार्थ वर्णन हिंदी के जिन लेखकों ने किया, उनमें अमरकांत का नाम काफी आगे की कतार में है। अमरकांत का कथा साहित्य मध्यवर्गीय परिवार का दस्तावेज है या हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार सूरदास वात्सल्य का कोना-कोना झांक आए थे ठीक उसी प्रकार अमरकांत भी मध्यवर्गीय परिवार का कोना-कोना झांक आए हैं। इनके कथा साहित्य में मध्यवर्गीय समाज का सजीव वर्णन मिलता है।

अमरकांत शुरुआती दिनों में प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े थे। जिसके कारण उनकी कहानियों पर भी मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव दिखता है। अमरकांत मार्क्सवादी विचारधारा के साथ ही साथ गांधीवादी विचारधारा से भी प्रभावित थे, क्योंकि उस समय गांधी जी का देश की जनता पर गहरा प्रभाव था। गांधीवाद एक प्रगतिशील जीवन दर्शन है जो समाज में रूढ़ियों, पुरानी पद्धतियों का हमेशा विरोध करता है। इसीलिए गांधीवाद का भी प्रभाव हमें अमरकांत की कहानियों में देखने को मिलता है। अमरकांत अपनी लेखनी के माध्यम से उच्च वर्ग के द्वारा किए जा रहे निम्न वर्ग पर अत्याचार का विरोध प्रत्यक्ष रूप से करते हैं। अमरकांत के कथा साहित्य पर विचार करते हुए निर्मल सिंहल ने लिखा है कि "अमरकांत की संवेदना हमारे निम्न एवं मध्यवर्ग की संवेदना है।" 1 अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार की संवेदना है। उन्होंने अपनी कहानियों की कथावस्तु में मध्य वर्ग के साधारण जीवन को वर्ण्य-विषय बनाया है। इसी विषय पर आधारित उनकी कहानी "दोपहर का भोजन" है। इस कहानी में मध्यवर्गीय परिवार में भूख की त्रासदी को अभिव्यक्त किया गया है। कहानी में वर्णित किया गया है कि- दोपहर का समय है। सिद्धेश्वरी रोटी और पनियाई दाल बना रखी है और उसे पता है कि जितनी रोटियां वह बना रखी है वह सभी के लिए कम पड़ जाएंगी। इस दोपहर के भोजन के न मिलने और पूरे परिवार को भूख की अग्नि में विवश होने को यह कहानी मार्मिकता से प्रस्तुत करती है। इस कहानी की सबसे खास बात यह है कि सभी पात्र इस भूख की पीड़ा और कमी को महसूस कर पाते हैं लेकिन प्रत्येक पात्र भरपेट भोजन कर लेने का नाटक करता है। कहानी में रामचंद्र से सिद्धेश्वरी जिद्द करती है तो रामचंद्र हाथ से मना करते हुए हड़बड़ा कर बोल पड़ता है - " नहीं, नहीं, जरा भी नहीं। मेरा पेट पहले ही भर चुका है। मैं तो यह भी छोड़ने वाला हूं। बस अब नहीं।" 2 एक प्रसिद्ध कहावत है कि नवाबों को नवाबी मार देती है और गरीबों को जरूरत मार देती है। दोपहर का भोजन ऐसे ही परिवार की कहानी है जहां भूख मिटाने की लड़ाई साफ दिखाई देती है। अमरकांत ने दोपहर के भोजन कहानी के द्वारा मध्यवर्ग की उस सच्चाई को अभिव्यक्त किया है जो आज भी हमारे समाज में अपने कठिनतम रूप में विद्यमान है। आज भी निम्न मध्यवर्ग परिवार के पास भरपेट भोजन उपलब्ध नहीं है। यह निम्न मध्यवर्ग हमेशा से उच्च मध्यवर्गीय जीवन जीने का प्रयास करता है। लेकिन उससे पहले इनके पास भूख मिटाने की लड़ाई सामने आ जाती है। अमरकांत की कहानियों में ऐसे चित्रण साफ दिखाई देते हैं।

अमरकांत की कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय पात्र अधिक सजीव और वास्तविक लगते हैं। क्योंकि इनकी कहानियों की भाषा मध्य वर्ग की भाषा है। उन्होंने मध्य वर्ग के जिन समस्याओं को उठाया है वह आज भी प्रासंगिक है - " उनकी कहानियों की रचना संसार अपने आसपास के परिचित और जीवंत परिवेश से निर्मित है। जीवन की वैविध्य, उसकी ताजगी और अनगढ़ता ही उनकी कहानियों का सबसे बड़ा आकर्षण है। अपने समय संदर्भों की पहचान की दृष्टि से अमरकांत की कहानियां उनके किसी भी समकालीन दूसरे लेखकों की कहानियों की अपेक्षा अधिक प्रमाणित और विश्वसनीय मानी जा सकती है।" 3

मध्यवर्गीय परिवार सामाजिक प्रतिष्ठा को ही अपनी संपत्ति समझता है। वह सामाजिक प्रतिष्ठा को बचाने के लिए हर संभव कोशिश करता है। इसी कोशिश में वह अपनी प्राण की भी चिंता नहीं करता है। 'सुखापत्ता' उपन्यास में अमरकांत ने कृष्णकांत के पिता द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठा के सवाल को बार-बार उठाया है। कृष्णकांत को जब पुलिस पकड़ने आती है तब वह चिंता नहीं करते हैं कि उनका बेटा जेल जाने वाला है। बल्कि वह खुश होते हैं कि उनका लड़का क्रांतिकारी बने और देश को आजाद करने के लिए कुछ करें। इनसे उनकी समझ में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वहां गर्व से घर की औरतों को कहते हैं - " क्या शोर मचा रखा है ? कोई कमी हुई है कि इस तरह से रो रही हो तुम लोग? लड़का है, रोना - धोना बंद करो। उठो बेटा हाथ मुंह धो लो और कपड़े बदल लो। " 4 लेकिन जब वह सुनते हैं कि उनका बेटा अपनी जाति के बाहर की लड़की से विवाह करना चाहता है तो उन्हें समाज में मुंह दिखाने की चिंता हो जाती है। इस उपन्यास के माध्यम से अमरकांत जी ने मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी समस्या को दिखाया है। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए वो कैसे खुश और जैसे ही पता चलता है तुरंत चिंतित हो जाते हैं। यहां साफ दिखता है कि मध्यवर्गीय परिवार सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए कुछ भी करने को तैयार है। अमरकांत ने कथा साहित्य के माध्यम से उस सच्चाई को उजागर किया है जिसे हम आज भी देखते हैं। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अपने घर की कमाई, मर्यादा और प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। भले ही उसके पास खाने- पीने का पैसा ना हो, लेकिन सामाजिक अकड़न के लिए वह कभी पीछे नहीं हटेगा।

अमरकांत की प्रसिद्ध कहानी 'डिप्टी कलेक्ट्री' हिंदी साहित्य की कथा परंपरा में एक प्रतिमान की हैसियत पा चुका है। नामवर सिंह समेत सभी आलोचकों ने एक स्वर में यह माना है कि यह कहानी मध्यवर्गीय परिवार की आकांक्षाओं की पूर्ति न होने के कारण व्यवस्था से मोहभंग की कहानी है। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि एक मध्यवर्गीय परिवार अपने वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिए कितना परिश्रम करता है। सकलदीप बाबू अपने पुत्र नारायण के डिप्टी कलेक्टर में सफल होने की कामना करते हैं। उनका पुत्र बेरोजगार होता है और दो बार परीक्षा में असफल हो चुका होता है और तीसरी की तैयारी करता है। सकलदीप बाबू पहले तो गुस्सा होते हैं पर बाद में वह मान जाते हैं। फिर उसके सफल होने के लिए पैसे की व्यवस्था करते हैं और पूजा पाठ में डूब जाते हैं। जिस दिन बेटे का एग्जाम होता है उसे चुपके से प्रसाद देते हैं। परिमाण आने से पहले ही बेटे के सफल होने का सपना देखते हैं। नारायण के डिप्टी कलेक्ट्री में सफल होने की आकांक्षा मात्रा पर पूरा शहर सकलदीप बाबू को बधाई देने उमड़ पड़ता है। लेकिन जब परिमाण उल्टा होता है तो वह निराश होते हैं। फिर बेटे के लिए चिंतित होते हैं कि बेटा इस सदमें को कैसे झेले पाएगा। कहीं उसे कुछ हो ना जाए। इस चिंता में वह उसे देखने जाते हैं और अंत में बेटे को सोता हुआ देख कर राहत की सांस लेते हैं। इस कहानी के माध्यम से अमरकांत ने मध्यवर्गीय परिवार के सपनों के बारे में बताते हैं। हर मध्यवर्गीय परिवार चाहता है कि वह अपनी वर्तमान स्थिति से और बेहतर स्थिति में पहुंच जाए। इसी सपने का सजीव वर्णन डिप्टी कलेक्ट्री कहानी में मिलता है।

मध्यवर्गीय परिवार में डिप्टी कलेक्ट्री का अर्थ है अचानक अपने बराबर वालों से बहुत ऊपर उठ जाना। लेकिन जब उनका सपना टूटा है तो उनकी स्थिति यह रहती है कि वह एक शब्द भी बोल नहीं पाते हैं। -

"सकलदीप बाबू ने गदगद स्वर में कहा ' बबुआ सो रहा है।' वह आगे कुछ ना बोल सके उनकी आंखें भर आई थी वह दूसरी और देखने लगे।" 5

शकलदीप बाबू के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय समाज की संवेदना की आशा- निराशा के द्वंद्व को अमरकांत ने बड़ी ही सजीवता से दिखाया है।

अमरकांत का कथा साहित्य एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए लिखा गया है। जिसमें जीवन की गहरी समझ, गहरी

चिंता और सरोकार के झूठे आडंबरों के रूप को परिवर्तित कर यथार्थ चित्रण पर विशेष बल दिया गया है। इनकी कहानियों में ऐसा प्रतीत होता है कि इनके पात्र आपस में बातें करते हैं। उन्होंने अपने एक साक्षात्कार में कहा है कि - "गहरी मानवीय संवेदनाओं एवं व्यापक सहानुभूतियों से ही रचना प्रभावशाली एवं संप्रेषण बनती है।" 6

'मूस' अमरकांत की चर्चित कहानियां में से एक है। इस कहानी में किसान शहर आकर कैसे मजदूर बनता है और उसकी हालत दिन प्रतिदिन बद से बर्तर होती चली जाती है। इसका वर्णन मूस कहानी में मिलता है। अमरकांत के कथा साहित्य में जो पात्र संरचना है उसके बारे में आलोचक राजेंद्र यादव कहते हैं कि " अमरकांत का शायद ही कोई पात्र अपनी नियति या स्थिति को बदलने की बात सोचता या करता हो। जहां-जहां ऐसा है, वहां उठे हुए उबाल की तरह फौरन ही ठंडा हो गया है। मैं आज तक तय नहीं कर पाया कि 'जिंदगी और जोंक' जीवन के प्रति आस्था की कहानी है या जुगुप्सा, आस्थाहीनता और डिसगस्ट की।" 7 (अमरकांत एक मूल्यांकन , रवींद्र कालिया पृष्ठ संख्या 188)

भाषा भाव की अभिव्यक्ति है। अमरकांत ने भी प्रेमचंद की तरह बहुत ही सरल अंदाज में देशज शब्दों के माध्यम से मध्यवर्ग की समस्याओं को दर्शाया है। अमरकांत की सरल और सहज दिखने वाली भाषा में जिंदगी की बेचैनी को देखा जा सकता है। आलोचक नामवर सिंह ने लिखा है कि "अमरकांत की भाषा प्रेमचंद की परंपरा का अद्यतन विकास है, वही सादगी और वहीं सफाई है। पढ़ने और गद्य की शक्ति में विश्वास जमता है।" 8 अमरकांत ने प्रेमचंद से कम कहानी लिखी है। लेकिन अमरकांत की कहानियों में प्रेमचंद की भांति ही जिंदगी की वास्तविकता बहुत ही विश्वसनीय ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में किसान की जिस स्थिति को दिखाया है ठीक उसी प्रकार मूस कहानी में अमरकांत ने भी किसान की बिगड़ती स्थिति को दिखाया है।

अमरकांत की भाषा इतनी सरल होती है कि साधारण पाठक भी अमरकांत के पात्रों के साथ अपना संबंध जोड़ सकता है। भाषा के संबंध में आलोचक रामविलास शर्मा ने लिखा है कि- "भाषा व्यक्तिगत इकाई नहीं है, न किसी व्यक्ति ने अकेले भाषा रची है, न केवल अपने लिए वह भाषा का प्रयोग करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यह सत्य सबसे ज्यादा स्पष्ट भाषा के क्षेत्र में दिखाई देता है। भाषा समाज के सभी सदस्यों के रुचिभेद, ध्वनिभेद को समेटकर एक व्यापक स्तर पर समन्वय उपस्थित करती है। इस समन्वय के विना मनुष्य आपस में विचारों का आदान-प्रदान नहीं कर सकते, वे एक समाज के सदस्य नहीं हो सकते।" 9 निम्न मध्यवर्गीय जनता की समस्याओं को साधारण अंदाज में सहज शैली के साथ अमरकांत जैसा ही कोई अन्य शैली में प्रस्तुत नहीं कर सका। इस संदर्भ में आलोचक मार्कण्डेय कहते हैं कि "आज 'नयी कहानी' नाम से प्रचारित अधिकांश रचनाएं भावबोध के स्तर पर नवीनता से कोसो दूर हैं और लेखक कहीं का रोड़ा, कहीं का पत्थर मिला कर एक ऐसा घालमेल कर रहे हैं, जिसमें नयी वास्तविकता अथवा नए भावबोध की तो बात ही दूर रही, शिल्प और चरित्रगत मनोविज्ञान की प्राभिक समझ तक का अभाव है। अमरकांत विचित्र चरित्रों की रचना छोड़कर अपनी कहानियों में समय के अंतराल को भर सकें, तो नए भावबोध के ग्रहण की समस्या खुद ही हल हो सकती है।"10 यही कारण है कि अमरकांत की भाषा बोलचाल की भाषा है। इन्होंने अपनी कहानियों में कई जगहों पर विदेशी शब्दों का भी प्रयोग किया है जिससे उनकी कहानीयां और भी लोगों का दिल छू बैठी है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अमरकांत की कहानियों में परिवार विघटन, आर्थिक संकटों की समस्याओं से जूझती मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। अमरकांत के कथा साहित्य का उद्देश्य मध्यवर्गीय समाज से है। इसका कारण यह है कि अमरकांत स्वयं मध्यमवर्ग से थे और केवल वही नही देश की आधी जनसंख्या मध्यवर्ग से संबंधित है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में उसी सच्चाई को रखा जिनको उन्होंने भोगा है। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं को प्रतिष्ठित किया है। इनकी रचनाओं में सामाजिक बदलाव के प्रति व्याकुलता दिखाई पड़ती है। इन्हीं कारणों से अमरकांत की कथा साहित्य समकालीन साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान स्थापित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1 सिंहल निर्मल, नई कहानी और अमरकांत, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 1999, पृष्ठ संख्या - 116.

2. कालिया रविंद्र, अमरकांत एक मूल्यांकन, सामायिक बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 40.
3. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- 2004, पृष्ठ संख्या- 158.
4. अमरकांत, सूखापत्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष- 1984, पृष्ठ संख्या- 102.
5. कालिया रविंद्र, अमरकांत एक मूल्यांकन, सामायिक बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 68
6. वही, पृष्ठ संख्या- 114
7. वही पृष्ठ संख्या - 188
8. सिंह नामवर, कहानी : नई कहानी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- 1973, पृष्ठ संख्या- 48.
9. शर्मा रामविलास, भाषा और समाज, पृष्ठ - 408
10. कालिया रविंद्र, अमरकांत एक मूल्यांकन, सामायिक बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 196

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com